PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Hindustan, Delhi
Thursday, 25th November 2010, Page: 11
Width: 8.68 cms Height: 15.62 cms, Ref: pmin.2010-11-25.49.33

सीएसआईआर की बड़ी कामयाबी

एंटी क्लाट दवा 750 करोड़ में बिकी

थर्मोबायोलेटिक को बाजार में उतारने के लिए अमेरिकी कंपनी से समझौता

विशेष संवाददाता

नई दिल्ली

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने रक्त के थक्के (क्लाट बस्टर) रोकने वाली दवा थर्मोबायलेटिक को बाजार में उतारने के लिए अमेरिका की कंपनी नोस्ट्रम फार्मास्युटिकल के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।

नोस्ट्रम इस दवा के लाइसेंस के लिए सीएसआईआर को १५० मिलियन डॉलर यानी करीब 750 करोड़ रुपये की राशि प्रदान करेगी। सीएसआईआर के इतिहास में या किसी भारतीय सरकारी कंपनी द्वारा विकसित दवा की यह अब तक की सबसे ज्यादा लाइसेंस फीस है।

यहां प्रगति मैदान में अन्तरराष्ट्रीय व्यापार मेले के दौरान विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी मंत्री कपिल सिब्बल की मौजूदगी में इस तकनीक हस्तांतरण समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। समझौते पर भारत की तरफ से सीएसआईआर के डीजी समीर के. ब्रह्मचारी और नोस्ट्रम की तरफ से डा. मूलये ने हस्ताक्षर किए। यह दवा सीएसआईआर की चंडीगढ़ स्थिति प्रयोगशाला इम्टैक में डा. गिरीश साहनी की टीम ने विकसित की है। टीम ने काफी पहले यह दवा विकसित की थी जिसकी पहली और दूसरी पीढ़ी के लाइसेंस पहले ही जारी किए जा चुके हैं और दवा बाजार में उपलब्ध है। अब तीसरी और चौथी पीढ़ी का वर्जन तैयार किया गया है। यह थर्मोबायलेटिक नसों में रक्त के जमा होने की स्थिति में उनमें पुन अवरोध से रोकता है। बाजार में एंटी क्लाट बस्टर कई दवाएं हैं लेकिन नई पीढ़ी की इस दवा की खासियत यह है कि यह पूरी तरह से नई पीढ़ी का मालीक्यूल है।

फायदा

- तीसरी पीढ़ी की प्रभावी दवा है थर्मोबायलेटिक

इस मौके पर सिब्बल ने कहा कि यह समझौता बेहद महत्वपूर्ण है तथा उन्होंने इस कार्य में जुटे वैज्ञानिकों को बधाई भी दी। उन्होंने कहा कि यह अब तक का सबसे बड़ा प्रौद्यौगिकी हस्तांतरण का समझौता है।